आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:03-01-15

इस कल्प के अन्त में हम भाग्यशाली आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाकर हमें मुक्ति और जीवनमुक्ति प्रदान करने वाले, बेहद के गति-सद्गति दांता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - पास विद ऑनर होना है तो श्रीमत् पर चलते रहो, कुसंग और माया के तूफानों से अपनी सम्भाल करो.

अभी हम सब ब्राह्मण आत्मा ये पुरुषार्थ कर रही है मुक्ति और जीवनमुक्ति में जाने का. बाबा ने कहा है वह सब आत्माओं को मुक्ति में तो लेकर ही जायेंगे. लेकिन जीवन-मुक्ति में तो हम ब्राह्मण आत्मा ये ही नम्बरवार अपने पुरुषार्थ अनुसार ही जायेंगी. हम सब ब्राह्मण आत्माओं का लक्ष्य है समय से पहले अपने को कर्मातित बनाना. लेकिन आत्मा जब तक यहाँ के सब कर्मबंन्धनों से मुक्त न हो तब तक कर्मातित भी बन न सके. बाबा ने आज मुरली में स्पष्ट समझाया की हम सब ब्राह्मण आत्माओं में से ऑन्ली 8 आत्मा ये ही पास विद ऑनर बनती है. यह आत्मा ये अपना शरीर छोड़ने से पहले अपने सब कर्मबंन्धनों से मुक्त हो जाती है इसलिए उन्हें कोई भी प्रकार की सजायें नहीं खानी पड़ती. यही अष्ट रत्नों की माला ही भक्ति मार्ग में आधा-कल्प गाते आए हैं.

अपने सर्व कर्मबंन्धनों से मुक्त होने का रास्ता भी एक मात्र है - हर पल मेरे मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे, परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा शिवबाबा की अटूट याद. यह याद हमें तब रह सकती है जब हमारे सर्व-सम्बन्ध एक बाप से ही हो. हमें किसी मनुष्य आत्मा के संग का रंग न लगे पर सदा एक बाप का ही संग हो - बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास हैं. किसी के भी प्रति हमारा व्यर्थ-नेगेटिव संकल्प मात्र भी न चले. मन-वचन-कर्म से किसी कि भी ग्लानि न करें, किसी को दुख ने दे. कुछ देखना है तो सर्व में गुण अर्थात विशेषता ये देखे. सदा मधुर-मीठा बोले और सदा खुश रहे. ऐसी आत्मा ये ही अपने नये कर्मबंन्धनों से मुक्त रहती है और एक बाप की ही लगन में मगन रह कर अपने अंतिम जन्म को पसार करती हैं.

आज की मुरली से कुछ महा-वाक्यों को फिर से पढ़ेंगे तो बाबा की याद हमारे में पक्की होती जायेंगी.

- मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बाप ने कहा, नई दुनिया में चलने वाले मीठे-मीठे रुहानी बच्चों प्रति बाप गुडमॉर्निंग कर रहे हैं. रुहानी बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं कि बरोबर हम इस दुनिया से दूर जा रहे हैं - अपने स्विट साइलेन्स होम में. आत्मा ये जानती है वह है मूलवतन, हम आत्माओं का घर. लेकिन उस घर में बाप के सिवाय कोई ले न जा सके.

- मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बाप ने कहा, भक्ति मार्ग में भी बाप को ढूंढने के लिए तुमने कितने धक्के खाये. अब बाप खुद कहते हैं मैं हूँ ही गुप्त. तुम मुझे इन आंखों से देख नहीं सकते. तुमको तो सिर्फ कहता हूँ - लाडले बच्चे, तुम अपने पारलौकिक बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो. बस और कोई तकलीफ नहीं.

- मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बाप ने कहा, बाप तो तुम्हें हीरे जैसा बनाते हैं. बाबा तुम्हें कितना प्यार से समझाते हैं - मीठे बच्चे, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो. हीरे जैसा बनना है तो बाप को याद करो.

-- मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बाप ने कहा, अभी है ही कयामत का समय. सबका हिसाब-किताब चुक्तू होता है. 8 की माला जो बनी हुई है वह है पास विद ऑनर्स की. 8 आत्मा ये ही नम्बरवन में जाते हैं, जिनको जरा भी सजा नहीं मिलती है. कर्मातित अवस्था को पा लेते हैं. फिर हैं 108, नम्बरवार तो कहेंगे ना. यह बना-बनाया अनादि ड्रामा है. कोई-कोई बच्चे पीछे आये हैं, श्रीमत् पर चलते रहते हैं. ऐसे ही श्रीमत् पर चलते रहें तो पास विद ऑनर्स बन 8 की माला में आ सकते हैं.

-- मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बाप बच्चों को समझाते हैं - मीठे बच्चे, पढ़ाई में गफलत मत करो. नई दुनिया में ऊँच पद का सारा मदार पढ़ाई पर है. यह पढ़ाई तो बहुत सहज है. स्वदर्शन चक्रधारी बनना है अर्थात अपने 84 जन्मो के आदि-मध्य-अन्त को जानना है. बाप तुम्हें राय देते हैं, बहुतों को रास्ता बतायेंगे तो बाप भी तुम पर क़ुरबान जायेंगे. साथ में बाप को याद करने का अभ्यास करना है ताकि पाप कट जायें. ऐसे याद में शरीर छोड़ना है.

ॐ शांति. Experiences/Feedbacks/Queries to Atma Bhai on a.brahmin.soul@gmail.com .